निम्नलिखित तर्कों के आधार पर लोकप्रशासन को एक विज्ञान माना गया है।

(i) क्रमबद्ध अध्ययन (Systematic Study) :- लोकप्रशासन एक ऐसा सामाजिक शास्त्र है, जिसका क्रमबद्ध ढंग से अध्ययन किया जाता है। जैसा कि हम जानते हैं कि क्रमबद्ध अध्ययन द्वारा प्राप्त ज्ञान को विज्ञान कहा जाता है। लोक प्रशासन का अध्ययन क्रमबद्ध ढंग से किये जाने के कारण लोकप्रशासन एक विज्ञान है।

(ii) वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग (Use of Scientific Methods) :- लोक प्रशासन एक ऐसा सामाजिक शास्त्र है जिसका क्रमबद्ध ढंग से अध्ययन किया जाता है। क्रमबद्ध अध्ययन द्वारा प्राप्त ज्ञान को विज्ञान कहा जाता है। लोकप्रशासन का अध्ययन क्रमबद्ध ढंग से किये जाने के कारण लोकप्रशासन एक विज्ञान है।

(iii) पूर्वानुमान की सम्भावना (Probability of predictability) :- लोकप्रशासन में घटनाओं का अध्ययन करने पर कुशल प्रशासक यह अनुमान लगा सकते हैं कि इन घटनाओं के क्या-क्या परिणाम होंगे। अपने इस अनुमान से प्रशासक घटनाओं के प्रभाव से अपने को बचा सकते हैं। अगर परिस्थितियाँ एक जैसी हो, और पूर्व में प्रशासन द्वारा उठाये गये कठोर कदमों के अच्छे परिणाम आये हैं, तो यह भविष्य वाणी की जा सकती है कि आगे भी इसके अच्छे परिणाम आयेंगे। इस दृष्टिकोण से भी लोकप्रशासन को विज्ञान के रूप में माना जाता है।

(iv) एक विशेष तकनीक की आवश्यकता (Need for a Special Technique) प्रत्येक वैज्ञानिक के लिए सम्बन्धित विषय के विशेष तकनीक सम्बन्धित ज्ञान का होना आवश्यक है। प्रशासक को अपने कार्यों के कुशलतापूर्वक संचालन के लिए एक विशेष प्रकार की तकनीक को अपनाने की आवश्यकता पड़ती है। लोकप्रशासन उस विशेष तकनीक का ज्ञान देता है जिसे प्रशासक प्रयोग में लाता है। अतः लोक प्रशासन में प्रशासकीय तकनीक से संबंधित उपायों का वर्णन किया जाता है।

(v) आधारभूत सिद्धान्तों का संकलन (Contents of Basic Theories) :- विज्ञान में आधारभूत सिद्धांतों का होना आवश्यक है। लोकप्रशासन में आधारभूत एवं सर्वमान्य सिद्धान्तों का वर्णन ग्रंथों और लेखों में है ये सिद्धांत हैं आदेश की एकता, निर्यंत्रण के क्षेत्र, आन्तरिक निरीक्षण आदि।

(vi) शोध एवं नये प्रयोग (New experiments and Research) :- जिस तरह सामान्य विज्ञान में नये-नये प्रयोग और शोध किये जाते हैं ताकि नयी संभावनाओं का पता लगाया जा सके, उसी प्रकार लोकप्रशासन के क्षेत्र में भी नये-नये प्रयोग किये जा रहे हैं तथा प्रशासनिक तकनीक से सम्बन्धित विषयों पर शोध करके नयी संभावनाओं का पता लगाया जा रहा है। Charles Beard के अनुसार लोकप्रशासन में ऐसे नियमों और स्वयं सिद्ध सूत्रों का विकास हो गया है जिसके बारे में अनुभव के आधार पर यह पता चलता है कि उन्हें निश्चित अवसर में लाया जा सकता है और उनसे लगभग भविष्य वाणी भी की जा सकती है।

लोकप्रशासन एक ओर कला तो दूसरी ओर विज्ञान

PA - Both (Arts & Science)

कभी-कभी कला और विज्ञान के बीच विरोध खोज लिया जाता है। कहते हैं कि विज्ञान व्यवस्थित ज्ञान है तो कला व्यवस्थित अभ्यास। यह बात सही है परन्तु इससे यह निष्कर्ष निकालना बिल्कुल गलत होगा कि जो वस्तु विशेष कला है, वह विज्ञान हो ही नहीं सकती। कला निश्चय ही व्यवस्थित अभ्यास है, परन्तु इसके पास व्यवस्थित ज्ञान का सूचना-वैभव भी होना ही चाहिए। हर कला जैसी कला का एक विज्ञान होता है या अनेक विज्ञान होते हैं। इस विज्ञान या इन विज्ञानों को कभी कला विशेष के नाम से पुकारा जाता है तो कभी दूसरा नाम या दूसरे नाम दे दिये जाते हैं। यानी संगीत कला के साथ-साथ संगीत विज्ञान भी चलता है और यह संगीत विज्ञान ही संगीत का सैद्धांतिक पथ-प्रदर्शक बनता और उसके अनुसरण का सही मूल्यांकन करता है। इसी प्रकार चिकित्सा विज्ञान, भौतिकी, शरीर रचना शास्त्र, दर्शन आदि पर आधारित होता है। इसी नियम के अनुसार, लोकप्रशासन कला और विज्ञान दोनों ही है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि प्रशासन कला का कुशल अभ्यस्त अनिवार्यतः प्रशासक वैज्ञानिक भी होगा ही, अथवा यह कि प्रशासन विज्ञान में दक्ष व्यक्ति कुशल प्रशासक होगा ही। कहने का आशय केवल इतना है कि लोकप्रशासन की कला का ही सहयोगी अंग लोकप्रशासन विज्ञान है। यह तो सभी तत्काल स्वीकार कर लेते हैं कि लोकप्रशासन एक कला है परन्तु इस लोकप्रशासन का एक विज्ञान भी है। अतः लोकप्रशासन कला ज्यादा और विज्ञान कम है।

निष्कर्ष (Conclusion) :- लोकप्रशासन न तो प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति कोई यथार्थ और सुनिश्चित विज्ञान है, और न ही भविष्य में वैसा बन जाने की संभावना है। यह निष्कर्ष केवल लोकप्रशासन के बारे में ही नहीं, वरन् समस्त सामाजिक अध्ययनों के बारे में निकाला जा सकता है तथापि जब सामान्य व्यवहार में अन्य सामाजिक अध्ययनों के लिए 'विज्ञान' शब्द का प्रयोग होता है तब तक लोकप्रशासन को भी विज्ञान मानने में कोई आपत्ति नहीं है। संभव है कि भविष्य में शोध के फलस्वरूप लोकप्रशासन की अनिश्चितता समाप्त हो जाये, तथा चिंतन के फलस्वरूप प्राकृतिक विज्ञानों के इस दावे की उग्रता कम हो जाये कि वे यथार्थ और सुनिश्चित हैं तब सहज ही यह बात स्पष्ट हो जायेगी कि प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों में मौलिक भेद नहीं है, उनमें केवल मात्रा का अन्तर है।

डॉ० राजू मौची
विभागाध्यक्ष- राजनीति विज्ञान
डी. के. कालेज, डुमराँव
दिनांक - 06/07/20

(2)

(ii) योग्यता एवं अनुभव (Ability and Experience) :- किसी भी कलाकार की सफलता उसकी व्यक्तिगत योग्यता एवं अनुभव पर निर्भर है। अच्छी कला का प्रदर्शन करनेवाला योग्य एवं कुशल कलाकार होता है। कुशल प्रशासक भी अपनी योग्यता एवं अनुभव के द्वारा व्यक्तियों को निर्देश देता है और उनका एकीकरण करके उनपर अपना नियंत्रण रखता है। इस तरह योग्यता और अनुभव मिलकर प्रशासक की प्रशासन कला को चार चाँद लगा देते हैं।

(iii) चातुर्य एवं युक्ति (Cleverness and Tact) :- एक कलाकार अपने चातुर्य तथा युक्ति के बल पर अपनी कला को आकर्षित बनाता है। ठीक उसी प्रकार लोकप्रशासन में भी एक कुशल प्रशासक चातुर्य एवं युक्ति के बल पर सफल प्रशासक बन जाता है। प्रशासक की योग्यता (Ability) और क्षमता Capability पर यह निर्भर करता है कि वह अपने उद्देश्यों पर कैसे खड़ा उतरता है। चातुर्य और नवीन तकनीक के अभाव में न तो प्रशासन में निखार आ सकता है और न ही कला में निखार आ सकता है।

(iv) विकास की प्रक्रिया (Process of Development) :- जिस प्रकार कला का विकास धीरे-धीरे होता है उसी प्रकार लोकप्रशासन का भी विकास धीरे-धीरे क्रमिक रूप से हुआ है। अतः विकास की दृष्टि से भी लोकप्रशासन एक कला है।

(v) विशेष दृष्टिकोण (Special Attitude) :- प्रत्येक कलाकार का अपना एक विशेष नजरिया होता है जिसके आधार पर वह अपनी कला में निपुणता प्राप्त करता है। कलाकार को अपनी कला में सफलता प्राप्त करने के लिए विशेष रुझान या गुणों की आवश्यकता होती है जिसका काफी महत्व है।

(vi) परिवर्तनशीलता (Changeability) :- जिस प्रकार कला के सिद्धांत, पद्धति और प्रक्रियाएँ परिवर्तित होती रहती हैं उसी प्रकार लोकप्रशासन के सिद्धांत भी समय-समय पर परिवर्तन होते रहते हैं। जब तक लोकप्रशासन का विकास होते रहेगा तब तक उसके सिद्धान्तों, पद्धतियों और प्रक्रियाओं में कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य होते रहेंगे।

इस प्रकार प्रशासन एक ऐसा कौशल है जिसमें एक विशेष दृष्टिकोण, विशेष ज्ञान, विशेष रुचि तथा प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और जब सभी कारण मौजूद हो तो कोई ऐसा कारण नहीं जिसके आधार पर लोकप्रशासन को कला नहीं माना जाय। अतः लोकप्रशासन कला है।

लोक प्रशासन विज्ञान के रूप में (P.A IS A SCIENCE)

लोकप्रशासन एक सामाजिक विज्ञान है। इसको विज्ञान का दर्जा देने का दावा काफी पुराना है। वुडरो विल्सन, जिन्हें लोकप्रशासन का जनक माना जाता है ने 1887 ई० में ही इसे 'प्रशासन का विज्ञान' कहा था। विलोबी ने 1926 ई० में "प्रशासन में ऐसे कुछ मूलभूत सिद्धांत होते हैं जो सामान्य व्यवहार में किसी वैज्ञानिक सिद्धांत के समान होते हैं। 1937 में लूथर गुलिक और उर्विक ने लोकप्रशासन के विज्ञान होने के दावे को विश्वास के साथ पेश किया, जिसकी पुष्टि उन्होंने पेपर्स ऑन दि साइंस ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन' ग्रंथ में की।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA